International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

विकसित भारत एवं नारी शक्ति की प्रासंगिकता

डॉ0 पुष्पा सिंह

असि0 प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विभाग), कमला आर्य कन्या पी0जी0 कालेज, मीरजापुर (उ0प्र0), भारत

Author Email: pushpadeepaksingh@gmail.com

शोध सार–भारतीय नारी की प्राचीन काल से ही अपनी स्पष्ट पहचान रही है, जिसमें न केवल सुन्दरता रही है, बल्कि उसकी सादगी, विनम्रता एवं बुद्धिमता आदि गुणों का भी समावेशन सदैव से ही रहा है। अपाला, घोषा, सीता, लोपमुद्रा आदि अनेक भारतीय नारियों ने न केवल अपने परिवार में बल्कि देश व समाज के प्रत्येक क्षेत्र व स्तर में अपनी भूमिका एवं नेतृत्व को उच्च शिखर पर स्थापित किया। भारतीय नारियां आज आसमान की ऊंचाईयां एवं पर्वतों के शिखर को छू रही हैं, जिसका कारण हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं परम्परा में नारी को सदैव सम्मानित स्थान प्रदान करना रहा, जिससे इसकी नींव मजबूत एवं बुलन्द हुई। इसलिए भारत में प्राचीन समय से यह परम्परा रही है– **"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमते तत्र देवता।"** अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता का वास होता है। परन्तु महिलाएं आज के समय में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, साहित्य, संस्कृति, मीडिया आदि सभी क्षेत्रों में न केवल भागीदारी कर रही है, बल्कि नेतृत्व भी कर रही है।

यदि महिला शक्ति की नेतृत्व क्षमता अपनी सम्पूर्णता एवं सामंजस्यता के साथ शामिल हो जायें तो 2047 के विकसित भारत की योजना को साकार रूप लेने में कोई वाह्य या आंतरिक बाधा स्वतः अपने कदम पीछे खींच लेगी, क्योंकि यह भारत की नारी है, शक्ति है, दुर्गा है, लक्ष्मी है। यह अपाला है, घोषा है, सीता है, सावित्री है, इन्दिरा है, सरोजिनी नायडू है, महान गणितज्ञ शकुन्तला है, द्रौपदी मुर्मु है, रसोई घर में पूरी बनाने से प्रेरित होकर मंगल मिशन को सफल बनाने वाली महिला वैज्ञानिक तारा शिन्दे है।

महिलाओं को किसी भी क्षेत्र में कम आंकने का अर्थ है, खुद को कम आंकना। भारत को कम मानना एवं भारत को विकसित भारत बनने में अवरोध उत्पन्न करना। नारी भारत को महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में नेतृत्व करने के लिए उड़ान भरने को तैयार है, जिसके पंखों को कहीं से भी क्षति न पहुंचाने का संकल्प हम भारतीयों को लेकर 2047 के विकसित भारत अभियान को सफल बनाने में योगदान देना है।

मुख्य शब्द– भारतीय नारी, विकसित भारत, महिला नेतृत्व, भारतीय संस्कृति, महिला सशक्तिकरण

I. प्रस्तावना

भारतीय नारी की प्राचीन काल से ही अपनी स्पष्ट पहचान रही है, जिसमें केवल सुन्दरता ही नहीं, उसकी सादगी, विनम्रता एवं बुद्धिमता आदि गुणों का भी समावेशन सदैव से ही रहा है। अपाला, घोषा, सीता, लोपामुद्रा आदि अनेक भारतीय नारियों ने न केवल अपने परिवार में बल्कि देश व समाज के प्रत्येक क्षेत्र एवं स्तर में अपनी भूमिका एवं नेतृत्व को उच्च शिखर पर स्थापित किया। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में नारी की स्थिति पुरुषों के समकक्ष स्थापित थी। भारतीय नारियां आज आसमान की ऊंचाईयों एवं पर्वतों के शिखर को छू रही हैं, जिसका कारण हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं परम्परा में नारी को सदैव सम्मानित स्थान प्रदान करता रहा, जिससे इसकी नींव इतनी मजबूत एवं बुलन्द हुई। जब–जब भी नारी के सशक्तिकरण में बाधायें आयीं, भारतीय समाज में नारी से सम्बन्धित कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास किया जाता रहा है, जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा की पीड़ित स्थिति, पर्दा प्रथा, दास प्रथा जैसे अनगिनत उदाहरण हैं। भारतीय नारियों के उत्थान में समय–समय पर अनेक भारतीय नायकों–राजाराम मोहन राय, महात्मा गांधी, भीमराव अम्बेडकर, जवाहर लाल नेहरु ने तो प्रयास किया ही, स्वयं नारी ने भी दुर्गा, लक्ष्मी एवं काली के रूप में अवतरित होकर अपना एवं समाज का उद्धार किया। नारी को देवी, सहचरी, कुटुम्ब पालिनी आदि अनेकों नामों से पुकारा गया, जिससे स्पष्ट रूप से यह ज्ञात होता है कि नारी विभिन्न कार्यों को कैसे भिन्न–भिन्न रूपों में सम्पादित करती हुई आयी है। भारतीय समाज नारी के इन सभी रूपों का सम्मान एवं पूजा करता है, क्योंकि नारी के बिना परिवार, समाज एवं देश की अवनति को वह भली–भांति पहचानता है। इसलिए भारत में प्राचीन समय से यह परम्परा रही है कि **"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता।"** अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता का वास होता है। यद्यपि मध्यकाल में भारत में स्त्री की शिक्षा एवं समाज में उसके स्थान में काफी गिरावट आयी। परन्तु आज हम कह सकते हैं कि नारी अर्थात् आधी आबादी के बिना किसी भी राष्ट्र के विकास की कल्पना तो बहुत दूर की बात है, उसके सृजन में ही अवरोध उत्पन्न हो जायेगा। आज महिला सशक्तिकरण का युग है, महिला सशक्तिकरण का अर्थ है, महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक,

राजनैतिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक सभी प्रकार की शक्तियों में वृद्धि करना। महिलाएं आज के समय में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, साहित्य, संस्कृति, मीडिया आदि सभी क्षेत्रों में न केवल भागीदारी कर रही हैं, बल्कि नेतृत्व भी कर रही हैं। परन्तु इसी समाज में महिलाओं के साथ बार–बार घरेलू हिंसा, दहेज हत्या एवं यौन प्रताड़ना जैसे– भयावह कुकृत्यों को भी अंजाम दिया जाता है, जिससे भारतीय महिलाओं की सकारात्मक ऊर्जा, दूरदर्शिता, उत्साह प्रतिबद्धता एवं नेतृत्व शक्ति का ह्रास होता है।

साधारणतः विकसित देश को औद्योगिक देश कहा जाता है, जहां एक विकसित अर्थव्यवस्था होती है, जिसे आमतौर पर सकल घरेलू उत्पाद (जी0डी0पी0) या प्रति निवासी औसत आय द्वारा मापा जाता है। विकसित देशों के पास तकनीकी दक्षता का बुनियादी ढांचा होता है। इनके पास विभिन्न प्रकार की औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र भी होते हैं, जिसके बल पर यह विश्व नेतृत्व में भी अग्रणी रहते हैं। विकसित भारत सन् 2047 ई0 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी तक राष्ट्र को एक विकसित इकाई में बदलने की भारत सरकार की महत्वकांक्षी दृष्टि को प्रतिविम्बित करता है। इसमें भारत की आर्थिक समृद्ध, सामाजिक उन्नति, पर्यावरणीय स्थिरता और प्रभावी शासन जैसे विकास के विविध पहलुओं को शामिल किया गया है। इससे हमारी अर्थव्यवस्था और भी अधिक समावेशी और नवोन्वेषी होगी। भारत वर्तमान में अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी के बाद दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है तथा दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए अग्रसर है।

आज भारत की बेटियां जल, थल एवं नभ सभी में अपनी क्षमता का लोहा मनवा रही हैं। सेनाओं के सर्वोच्च कमाण्डर के रूप में राष्ट्रपति पद पर एक महिला सुशोभित है। भारत के चन्द्र एवं सूर्य अभियान में महिला वैज्ञानिकों की भूमिका भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में स्वर्णिम अक्षरों में लिखी जायेगी। शासन, प्रशासन, उद्योग, व्यापार खेल तकनीकी एवं विज्ञान सभी क्षेत्रों में महिला शक्ति नेतृत्व प्रदान कर रही है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र महिला नेतृत्व में अपनी मंजिल को प्राप्त करने के लिए लालायित हैं। यदि महिला शक्ति की नेतृत्व क्षमता अपनी सम्पूर्णता एवं सामंजस्यता के साथ शामिल हो जायें तो 2047 के विकसित भारत की योजना को साकार रूप लेने से कोई वाह्य एवं आंतरिक बाधा स्वतः अपने कदम पीछे खींच लेगी, क्योंकि यह भारत की नारी है, शक्ति है, दुर्गा है, लक्ष्मी है, यह अपाला है, घोषा है, सीता है, सावित्री है, इन्दिरा है, सरोजनी नायडू है, महान गणितज्ञ शकुन्तला हैं, द्रौपदी मुर्मु हैं, रसोई घर में पूरी बनाने से प्रेरित होकर मंगल मिशन को सफल बनाने वाली महिला वैज्ञानिक तारा शिन्दे हैं।

II. नारी शक्ति एवं पारिवारिक नेतृत्व

नारी शक्ति परिवार का आधार या मजबूत स्तम्भ बनकर भारत को एक शक्तिशाली, सुसंस्कृत एवं शिक्षित परिवार प्रदान कर सकती है। एक मां, पत्नी या गृहिणी के रूप में भी शिक्षित महिलाएं इन कार्यों द्वारा एक शक्तिशाली नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं। सुशिक्षित बच्चे देश के नेतृत्व एवं विकास में अपना योगदान देंगे, जिसमें मां की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। एक मां के द्वारा ही संतान को अनौपचारिक शिक्षा प्रदान की जाती है, जो संसार के किसी विद्यालय में सीखाई नहीं जा सकती है।

III. नारी शक्ति एवं समाज की शक्ति

परिवार के साथ–साथ समाज की शक्ति भी नारी केन्द्रित होती है। स्त्री के बिना किसी भी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। भारत के विभिन्न स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं ने न केवल नेतृत्व किया, बल्कि अपना सब कुछ छोड़कर देश पर बलिदान हो गई। लक्ष्मी बाई, बेगम हजरत महल, सरोजनी नायडू आदि का नाम भूला देना भारतीय इतिहास को कलंकित करना है। आज के भारत के विकसित समाज में महिलाएं अग्रणी नेतृत्व शक्ति प्रदान करेंगी।

IV. नारी शक्ति एवं शैक्षिक नेतृत्व

प्राचीन काल से ही नारी शक्ति सुशिक्षित, सक्षम एवं अपनी नेतृत्व शक्ति से समाज को राह दिखा रही है। अध्ययन एवं अध्यापन किसी भी क्षेत्र में महिलाओं ने अपने दम पर सफलता पायी है। प्राचीन भारतीय महिलायें, गार्गी, अनुसूईया, मैत्रेयी से लेकर सावित्री बाई फूले, कादंबिनी गांगुली, चन्द्रमुखी बसु, महादेवी वर्मा, दुर्गा बाई, देशमुख आदि अनेक नारियों ने अपने–अपने क्षेत्र में न केवल स्वयं को प्रतिष्ठित किया, बल्कि देश एवं समाज को दिशा भी प्रदान की।

V. नारी शक्ति एवं वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में नेतृत्व

वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र की महिलाओं के कार्यों से कोरा नहीं रहा। आज महिलाओं ने इन क्षेत्रों में शीर्ष नेतृत्व के साथ–साथ अपने सभी प्रकार के दायित्वों को सम्पूर्णता के साथ निर्वहन किया है। भारत की अनेकों महिलाओं, जिनमें भारत मिसाईल, महिला टेसी थामस,

कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स तथा मंगल मिशन की प्रोजेक्ट मॉम की निदेशक तारा शिन्दे का नाम उल्लेखनीय है, जिन्होंने अपने देश को गरिमामयी क्षण प्रदान किया। तिरंगे के सम्मान को नई ऊंचाईयों पर पहुंचाया।

VI. नारी शक्ति तथा आर्थिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में नेतृत्व

आज आर्थिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र भी महिला नेतृत्व से सुशोभित हो रहा है। देश के विभिन्न आर्थिक संस्थाओं में शीर्ष पर रहकर भारतीय महिलाओं ने अपनी कार्यक्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। सावित्री जिंदल, शोभना अरुंधति भट्टाचार्य, चन्द्रा कोचर महिला नेतृत्व के नाम हैं, जिन्होंने स्वयं को वहां स्थापित किया जो क्षेत्र पुरुषों के क्षेत्र माने जाते थे, आज स्त्रियों की एक बड़ी संख्या इस क्षेत्र में भी संलग्न होकर मनोयोग से कार्य कर रही हैं।

VII. नारी शक्ति एवं राजनैतिक नेतृत्व

राजनैतिक क्षेत्र में भी भारतीय महिलाएं पुरुषों से कहीं भी कमतर नहीं रही। शुचिता कृपलानी, इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, सुषमा स्वराज, द्रौपदी मुर्मु एवं स्मृति ईरानी राजनैतिक क्षेत्र में महिला नेतृत्व के नाम हैं, जिन्होंने यह साबित किया कि राजनीति में वे किसी पुरुष नेतृत्व से पीछे नहीं हैं। देश के विकास में इस पद पर भी रहकर महिला शक्ति ने अनेकों कार्य किये हैं।

VIII. नारी शक्ति एवं भारत की विरासत, भारत की संस्कृति, परम्परा एवं संस्कार का नेतृत्व

भारत की महिलाओं ने परिवार, समाज एवं देश के अमूल्यविरासत को न केवल संजोये रखा बल्कि नई पीढ़ी को भी अवगत कराया। इस नई पीढ़ी में संस्कारों का विकास इसी नारी शक्ति की देन है, जिसकी महत्वपूर्ण भूमिका को हम कभी भी अनदेखा करके विकसित भारत के लक्ष्य को साकार नहीं कर सकते हैं।

IX. निष्कर्ष

आज भारत को सभी क्षेत्रों में विकसित होने एवं विश्व गुरु का अपना खोया हुआ नाम प्राप्त करने के लिए नारी शक्ति की भूमिका का सदैव ही ध्यान रखना पड़ेगा। महिलाओं को किसी भी क्षेत्र में कम आंकने का अर्थ है, स्वयं को कम आंकना, भारत को कम मानना एवं भारत को विकसित भारत बनने में अवरोध उत्पन्न करना। शहरी क्षेत्र की महिलाओं के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की उचित शिक्षा एवं अवसर की समानता प्रदान करके भारत के विकास को गति एवं संतुलन प्रदान करने की आवश्यकता है। भारत की नारियों की दशा एवं दिशा को जितना सुविकसित किया जायेगा, उतना ही भारत को विकसित बनाने में सरलता प्राप्त होगी। नारियों का बहुआयामी विकास भारत के बहुआयामी विकास को नेतृत्व प्रदान करेगा। भारत के 2047 के विकसित भारत अभियान को ग्रामीण महिलाओं के द्वारा विभिन्न प्रकार का नेतृत्व प्राप्त होगा, जिसके दम पर भारत आर्थिक क्षेत्र के साथ–साथ जीवन के सभी क्षेत्रों में महाशक्ति बनकर उभरेगा, जिसकी नींव इन मातृशक्ति के द्वारा मजबूत एवं सुदृढ़ होगी तथा शीर्ष की इनकी कार्यक्षमता की पताका को सम्पूर्ण विश्व में लहरायेगा।

नारीशक्ति भारत को महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में नेतृत्व करने के लिए तैयार है, जिसके पंखों को कहीं से भी क्षति न पहुंचाने का संकल्प हम भारतीयों को लेकर 2047 के विकसित भारत अभियान को सफल बनाने में योगदान देना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Gupta, S.P. & Alka Gupta (2021): History Development and Problems of Indian Education, Allahabad : Sharda Pustak Bhavan.
2. पाठक, पी0डी0 (2020): भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएं, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर.
3. सिंह, राणा बलवंत (2014): भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर.
4. त्यागी, जी0एस0डी0 एवं पी0डी0 पाठक (2015): भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर.
5. चतुर्वेदी, पी0एन0 (2017): भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास, दिल्ली : प्रेमनाथ एवं सन्स.
6. शर्मा, पी0डी0 (2017): महिला सशक्तिकरण और नारीवाद, जयपुर : रावत प्रकाशन.
7. कुमार, मनीष (2018): महिला सशक्तिकरण दशा और दिशा, दिल्ली : कविता बुक सेन्टर.

8. शर्मा, मनोहरलालः ऋग्वेद, दिल्ली : लक्ष्मी प्रकाशन.

9. http://innovateindia.mygov.in visit bharat 2047

10. http://viksitbharatsankalp.gov.in